जून माह की साधना

विनायक चतुर्थी पर गणपति विनायक अनन्त साधना

धन की इच्छा, आकांक्षा किसे नहीं होती, चाहे वह गृहस्थ हो अथवा योगी। सभी का जीवन धन से ही संचालित होता है। धन का मूल स्वरूप ऋद्धि-सिद्धि तो गणपति की भार्यायें है और शुभ-लाभ उनके पुत्र है, प्रत्येक मनुष्य यही चाहता है कि वह विष्णु के समान अपने जीवन का पालनकर्त्ता स्वयं हो, उसे किसी के आगे हाथ न फैलाना पड़े, वह किसी के अधीन ना हो तथा लक्ष्मी रूपी शक्ति सदैव उसके साथ रहे, जिससे वह भगवान विष्णु के समान सभी कलाओं से पूर्ण हो सकें।

जीवन का अर्थ यह नहीं है, कि समस्यायें ना आये, बाधायें न आयें, अड़चने न आयें। बाधायें तो आयेंगी, विपत्तियां भी आयेंगी, जो विधि का लेख है उन पर साधनाओं के माध्यम से जीत सकें उनका प्रभाव हम पर न पड़े। साधक के जीवन में पग-पग पर बाधायें आती हैं परन्तु श्री गणपति हर समस्या पर विजय प्राप्त करने का मार्ग साधक के लिये पहले से ही प्रशस्त कर देते हैं। इस साधना को सम्पन्न करने से साधक ऋद्धि-सिद्धि को अनन्त स्वरूप में ग्रहण करने में पूर्णतः समर्थ होता है। जिससे जीवन अनन्त स्वरूपों में शुभ-लाभ, सुख समृद्धि, धन, ऐश्वर्य से युक्त होता है।

गणपति प्रमुख देवताओं में माने जाते हैं। सांसारिक जीवन के प्रत्येक कार्य में रिद्धि-सिद्धि सफलता प्रदान करना व विघ्नों का नाश करने की शक्ति केवल गणपति में ही है। वह बुद्धि के विशेष प्रतिनिधि हैं। महादेव के पुत्र होने के नाते उनका महत्त्व और भी बढ़ गया है। कोई कार्य आरम्भ करने से पूर्व उनकी ही पूजा की जाती है। गणेश का सिर हाथी का है जो बुद्धिमत्ता का प्रतीक है। उनके सिर पर सुशोभित होता चन्द्रमा शांति का प्रतीक है, विशाल नेत्र दिव्यता का स्वरूप है, बड़े-बड़े कान श्रवण शक्ति के प्रतीक हैं। पेट पर उत्कीर्ण सर्प एवं ऊँ का चिन्ह पुष्टि का प्रतीक है।

गणेश को विघ्न विनाशक कहा जाता है। मनुष्य जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये जिन गुणों की आवश्यकता होती है, उन्हें भगवान गणेश की चेतना को आत्मसात करने से ही प्राप्त किया जा सकता है। गणेश भक्त ऐसे ही गुणों का स्वरूप अपने अन्तः करण में बनाये, अपने इष्टदेव के रहस्यों को समझ कर उनको अपने व्यावहारिक जीवन में स्थान दें तभी वह ऋद्धि-सिद्धि एवं शुभ-लाभ के दाता सिद्ध हो सकते हैं। वास्तविक गणेश भक्त बनेंगे तभी इस लक्ष्य की प्राप्ति संभव हो सकेगी।

इस साधना को करने से साधक में सात्विक विचारों और सात्विक वातावरण का निर्माण होता है, पुत्र-पुत्रियों में सदाचार से युक्त होकर श्रेष्ठ कार्यों में संलग्न होते हैं। जिससे अभिभावकों की यशवृद्धि होती है। पति पतिव्रत्य और कुटुम्ब धर्म के प्रति चेतना प्रबल होती है, उसमें संतान के कल्याण के प्रति जागरूकता बढ़ती है। ऐसे घर में देवताओं का वास होने लगता है।

उक्त साधना विनायक चतुर्थी पर जो कि दिनांक 18 जून 2026 को सम्पन्न करें, साधना प्रक्रिया मई की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 24 से 25 पर अंकित है।

ध्यान के नियम

ध्यान, चेतना की वह यथार्थ अवस्था है-जहां कोई विचार या कोई विषय नहीं होता। हमारा मन एक नित्य व सतत प्रवाह है जहां सदा ही चाहे हम जो भी कार्य क्यों न कर रहे हो-विचार चलते रहते हैं, इच्छाएं, स्मृतियां, कोई योजना, क्रिया रात-दिन निरन्तर चलती ही रहती हैं। यहां तक कि नींद में भी हमारा मन चलता रहता है, स्वप्न भी चलते रहते हैं। इसके विपरीत जब कोई विचार नहीं चलते, कोई कामना जागृत नहीं होती, जीवन की सारी उठा-पटक जब शांत हो जाती है, हम मौन अवस्था में होते हैं- वह अवस्था ही ध्यान है।

ध्यान आंरभ करते समय याद रखें कि इसे उसी विधि से शुरू करें, उस तरीके को अपनाएं जो रूचिकर लगे। ध्यान को जबरदस्ती थोपना नहीं चाहिये क्योंकि यदि ऐसा किया तो कोई भी कार्य व क्रिया सहज नहीं हो पायेगी। और जिस दिशा में मन की सहज रूचि हो उसी दिशा में ध्यान सरलता से घटता है।

ध्यान लगाते समय इसके उचित स्थान का चयन करना आवश्यक है। इसके लिये एक छोटा सा मंदिर, घर का कोई कोना, ध्यान कक्ष चुन सकते हैं। फिर उस स्थान का किसी और काम के लिये उपयोग न करें, क्योंकि प्रत्येक कार्य की अपनी तरंगे होती हैं।

जो उस स्थान को जागृत करती है, ध्यान-साधना में सफलता के लिये, वहां एक सहज वातावरण निर्मित हो जाता है, जिसमें हम बहुत सरलता से ध्यान में गहरे प्रवेश कर सकते हैं।

ध्यान के लिये एक नियत समय चुनना भी बहुत उपयोगी होता है, क्योंकि हमारा शरीर व मन एक यंत्र है। यदि हम नित्य एक ही समय पर भोजन करते हैं, तो हमारा शरीर रोजाना उसी समय पर भोजन की मांग करने लगता है, ठीक उसी समय रोजाना हमें भूख लगनी आरंभ होती हैं।

यदि हम एक नियत स्थान पर, नियत समय पर रोज ध्यान करेंगे तो हमारे शरीर व मन में ध्यान के लिये भी एक इच्छा या भूख निर्मित होगी, एक भावदशा निर्मित होगी जो ध्यान लगाने में सहयोगी ही साबित होगी।

जहां ध्यान लगा रहे हैं, उस स्थान पर अंधेरा हो, अगरबत्ती-धूपबत्ती की महक को, स्वच्छ कपड़े, स्वच्छ आसन जिनका उपयोग केवल ध्यान के समय ही किया जाता हो, इन सब से ध्यान में मदद मिलती है, और ध्यान द्वारा परमात्मा मनुष्य में उतरता है, मनुष्य को आत्म-बोध होता है।